3. आर्थिक क्रियाओंका चक्रीय प्रवाह CIRCULAR FLOW OF ECONOMIC ACTIVITY

BY

DR. SMT. RAJANI V. SONTAKKE

ASEL. PROF.

ECONOMICS

INTRODUCTION: प्रस्तावना

- उत्पादन, उपभोग एवं विनिमय यह अर्थव्यवस्था की तीन प्रमुख प्रक्रियाये है।
- उपभोग और उत्पादन यह डॉ निरंतर चलनेवाली प्रवाही प्रक्रियाये है और बराबर मे चलती रहती है।
- यह प्रक्रियाये परस्पर सम्बन्धीत होकर वह परस्परावलम्बी भी है।
- उत्पादन से उपभोग होता है और उपभोग से उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है।
- सम्पूर्ण आर्थिक प्रक्रियाओ का प्रारंभ भी उत्पादन है और अंत भी उपभोग ही है।
- उत्पादन और उपभोग विनिमय पर अवलंबित होते है, यह दोनो प्रवाह विनिमय द्वारा सम्बन्धीत और परस्परवलम्बी होते है।

अर्थ : MEANING

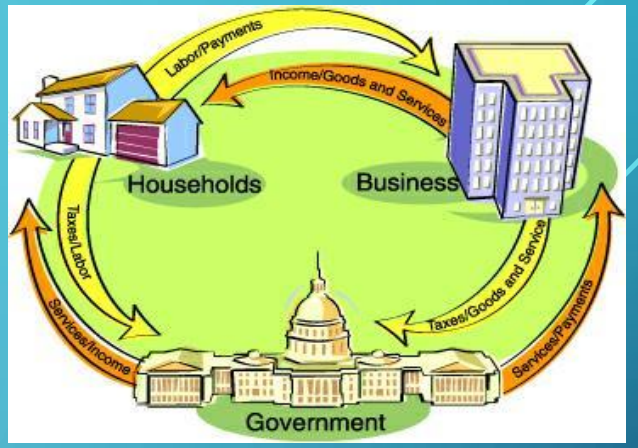

- दुर्लभता यह। सार्वत्रिक समस्या है। इस समस्या को हल करने का कार्य अर्थव्यवस्था की तीन संस्थाये करती है।
- १) व्यक्ती अथवा परिवार, २) फर्मे और ३) सरकार। इनही हो घरेलू क्षेत्र, व्यवसाय क्षेत्र और सरकारी क्षेत्र खा जात है।
- यह तिनो क्षेत्र वस्तू एवं सेवाओं का उत्पादन, उपभोग और विनिमय ईन आर्थिक क्रियाओं मे सक्रिय होकर आपस मे जूडे हुए है।
- “ घरेलू क्षेत्र से व्यवसाय क्षेत्र की ओर विनिमय मध्यम द्वारा होनेवाला उत्पादन साधनो का प्रवाह और व्यवसाय क्षेत्र से घरेलू क्षेत्र की ओर होणेवला वस्तू और सेवाओं का प्रवाह चक्राकार पद्धतीसे शुरु रहता हहसी।इसी को आर्थिक क्रियाओं का चक्राकार प्रवाह काहते है।”

मूल आर्थिक इकाईया: BASIC ECONOMIC UNITS

- १. परिवार: परिवार कुटुंब होता है या व्यक्ती। भारतीय राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संस्थान (NSSO) के अनुसार, " परिवार व्यक्ती ओ का वह समूह है जो एकसाथ रहते है तथा कॉमन रसोईघर में भोजन करते है।"
- "A Group of persons normally residing together and I taking food from a common kitchen."
- परिवार के तीन मुख्य कार्य है.....
- क) वस्तुओ तथा सेवा ओ के लिये आवश्यक उत्पादक कारको कीं पुर्ती करना। भूमी, श्रम, सनगठ न तथा पुंजी की आपुर्ती परिवार द्वारा हीं होती हाओ। अपनी सेवाओ के बदले में इन्हे लगन, मजदुरी, ब्याज तथा लाभ के रुप में आय प्राप्त होती है।
- ख) परिवार अर्थव्यवस्था में व्यय करनेवली प्रमुख इकाई भी होती है।उनके व्यय का पॅटर्न ही उतपादन के ढाचेको निर्धारित करता है।
- ग) परिवार बचत का प्रमुख स्रोत भी है। ऐसी बचत को वित्तिय संस्थाये एकत्रित करके विनियोग के लिये उपयोग में लाती है।

२. फर्म

- फर्म अर्थवयवस्था की। उत्पादक क्रियाओं का प्रतिनिधित्व भी करता है।
- इसप्रकार फर्म एक व्यवसायिक इकाई है जीसका कार्य उत्पादन के साधनोको मिलाना तथा वस्तुओ एवं सेवाओ का उत्पादन कराना है।फर्म के अंतर्गत कृषी, परिवार, व्यापरिक संस्था, वित्तीय इकाई या उत्पादन इकाई आते है।।
- फर्म के कार्य निमन प्रकार के है....
- क) परिवार द्वारा प्रदत्त उत्पादन के साधनोको खरीदकर रोजगार प्रदान करना।
- ख) विनियोग करना ताकी पुंजी संग्रह हो सके।
- ग) तकनिकी विकास की दिशा में प्रयत्न करना।

चक्रीय प्रवाह की मान्यतायें: ASSUMPTIONS OF CIRCULAR FLOW

1. चक्रीय प्रवाह द्विक्षेत्रीय ,साधे और बंद अर्थव्यवस्था में अस्तित्व में होता है।

- द्विक्षेत्रीय मॉडेल घरेलू क्षेत्र और व्यवसाय क्षेत्र इन दोनो से तैयार होता है।
- घरेलू क्षेत्र को जो आय प्राप्त होती है वह पूर्ण रूप से वस्तू एवं सेवाओ पर खर्च की जाती है। इसलीये व्यवसाय क्षेत्र को आय प्राप्त होती है।
- व्यवसाय क्षेत्र को वस्तू एवं सेवाओ की बिक्री से जो आय प्राप्त होती है वह लगन, मजदुरी, ब्याज और लाभ इ. के रूप में घरेलू क्षेत्र को वापस मिलती है।
- व्यावसायिक फर्मे बिक्री जितनाही उत्पादन करते है। अर्थात उत्पादन मांग के बराबर होता है।कोई भी माल पडा हुआ नाही रहता है, इसलीये चक्राकार प्रवाह कायम राहता है।

- व्यवसाय क्षेत्र अपनी सम्पूर्ण आय घरेलू क्षेत्र को देता है, इसलीये इस क्षेत्र के पास अवितरीत आय नहीं होती।
- घरेलू क्षेत्र के व्यवहार यह सर्वत्र समान होते है।
- जब आर्थिक व्यवहारो में सरकारी क्षेत्र का अंतर्भाव किया जात है तब असे आर्थिक क्रियाओका त्रिक्षे त्रिय मॉडेल काहते है, और चक्राकार प्रवाह के लिये व्यवहार में कुछ विशिष्ट समायोजन करने पडतें है।
- जब आर्थिक व्यवहारोमे विदेशी व्यापार क्षेत्र का अंतर्भाव किया जात हैं तब उसे खुली अर्थव्यवस्था के चार क्षेत्रिय मॉडेल कहा जाता है।ऐसी अर्थव्यवस्था में चक्रीय प्रवाह कायम रखने के लिये रिसाव (आयात) और भरपाई (निर्यात) में आवश्यक समायोजन करना पडता है।
- समष्टी अर्थशास्त्र के संतुलन के लिये चक्रीय प्रवाह कायम रखना आवश्यक होता है।

आय एवं व्यय का सरल चक्रीय प्रवाह: SIMPLE CIRCULAR FLOW OF INCOME & EXPENDITURE: TWO SECTOR MODEL

निजी अर्थव्यवस्था की प्रक्रिया को जानने कइ लिये आय तथा व्यय के चक्रीय प्रवाह को समजना आवश्यक है। निजी अर्थव्यवस्था में डॉ ही इकाईया होती है – परिवार तथा फर्म। यह माना गया है की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था इनही दो क्षेत्रामें विभाजित की गाई है।इसलीये ऐसे दो क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था में आय एवं व्यय का चक्रीय प्रवाहखा जात है।इस अर्थव्यवस्था में ना तो सरकार है न ही बचत एवं विनियोग है, न ही विदेशी व्यापार। अर्थात यह एक बन्द अर्थव्यवस्था है।

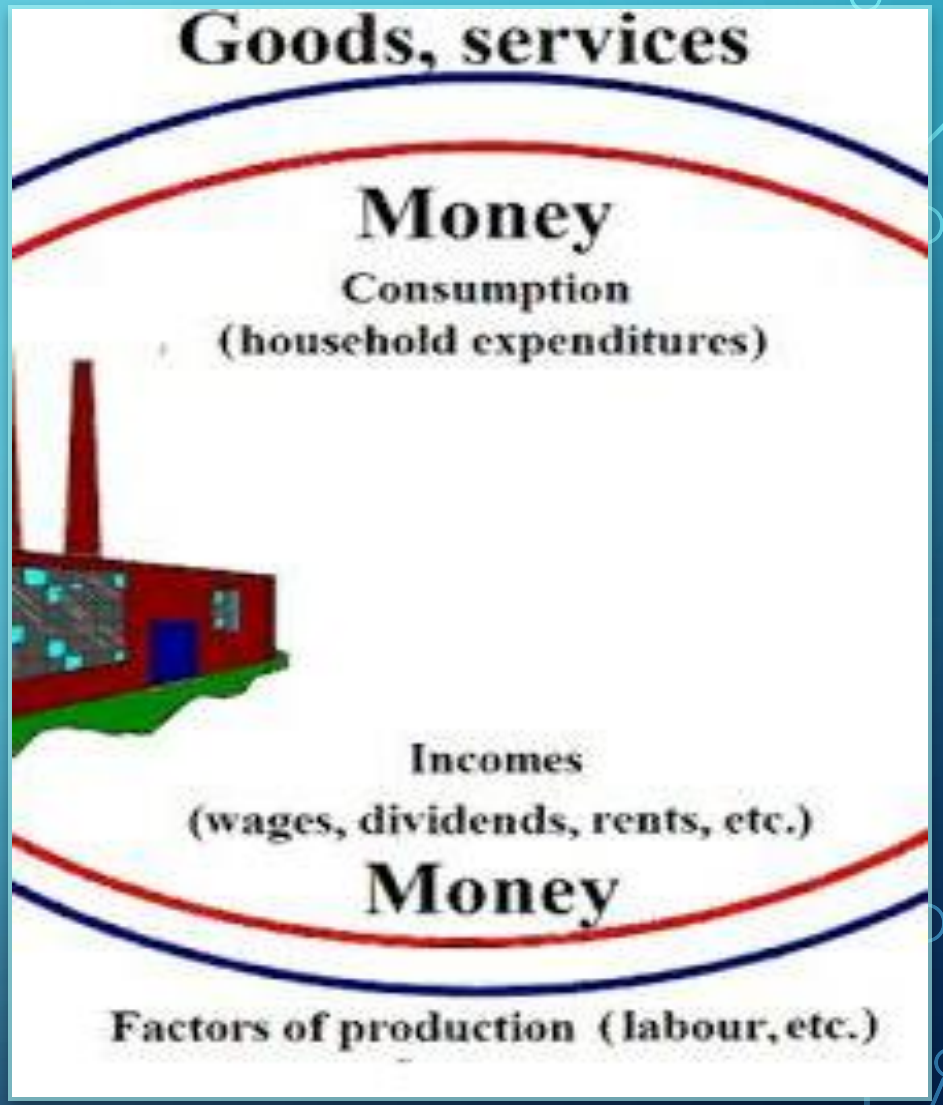

त्रिक्षे त्रिय अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह: CIRCULAR FLOW OF THREE SECTOR ECONOMY

सरकारी क्षेत्र सभी प्रकारकी सरकारे --- केंद्रीय, राज्यीय एवं स्थानीय सरकार कस संयोग दिखाया है की, सरकारी क्षेत्र को शामिल कर्णेपर चक्रीय प्रवाह किस तरच प्रभावित होता है। वस्तू बाजार से सरकार जो खरीद करती है वह वस्तुओ और सेवाओ पर खर्च करतो है। इस खरीद के वित्त पोषण केबलीये सरकार लोगोंपर कर लगाती है, और कर राजस्व कस ऐसेही वित्त पोषण का एक प्रमुख स्त्रोत हैं। कर वित्तीय प्रवाह का रीसाव है, जबकी सरकारी व्यय इ प्रवाह में इंजेक्शन है। जबतक कर राजस्व एवं सरकारी व्यय बराबर होंगे ,चक्रीय प्रवाह आवरत चलता रहेगा।

फर्म द्वारा उत्पादन के साधनोपर किया गया भूगता न ईस्क व्यय है, व्ही व्यय परिवार के लिये आय है जो ऊसे उत्पादक साधनोकी फर्म को पूर्ती कर नेपर प्राप्त होती है। परिवार द्वारा इस आय में से जो बचत की जाती है तथा वस्तूओ और सेवाओ की बिक्री से प्राप्त कुल आय फर्म द्वारा उत्पादक साधनोपर किये गये कुल भूगतांन के बराबर हो जाती है। इस से चक्रीय प्रवाह की प्रक्रीया में कोई व्यवधान नाही पडता है।

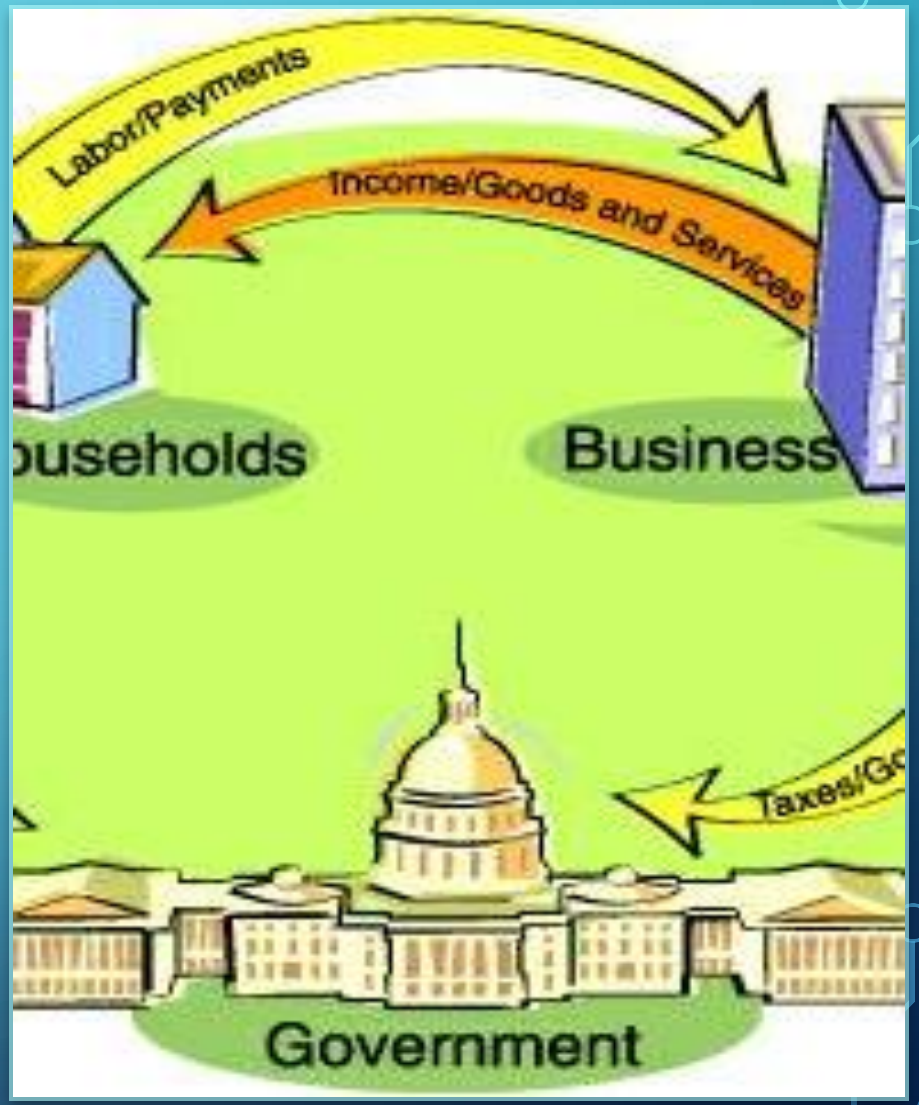

चार क्षेत्रिय अर्थव्यवस्था में चक्रीय प्रवाह: CIRCULAR FLOW IN FOUR SECTOR ECONOMY

इसके फळे वाले चक्रीय प्रवाह में बन्द अर्थव्यवस्था को पाय गया था। परन्तु चर क्षेत्रिय चक्रीय प्रवाह में खुली अर्थव्यवस्था होती है, अर्थात विदेशी व्यापार समाविष्ट होता है।

विदेशी क्षेत्र में अन्य देशो में स्थित सभी परिवार, फर्म तथा सरकार को शामिल किया जात है।

जब अपने देश की अर्थव्यवस्था अन्य देशोसें वस्तूओ तथा सेवाओ को खरी दता है तो असे आयात क ह ते है।तथा जब अन्य देश वस्तू एवं सेवाओ को खरिद्ता है तो उसे निर्यात कहते है।

आयात चक्रीय प्रवाह का रिसाव है क्योकी यह विडीशी वस्तुओ तथा सीवॉपर खर्च किया गया घरेलू व्यय है इसके विपरीत निर्यात चक्रीय प्रवाह का इंजेक्शन है, जीससे चक्रीय प्रवाह के परिणाम में वृद्धी होती है।

आयात तथा निर्यात की मात्रा बराबर होणे से चक्रीय प्रवाह की क्रियस एकसमान बिना किसीं व्यवधान के चलती है।

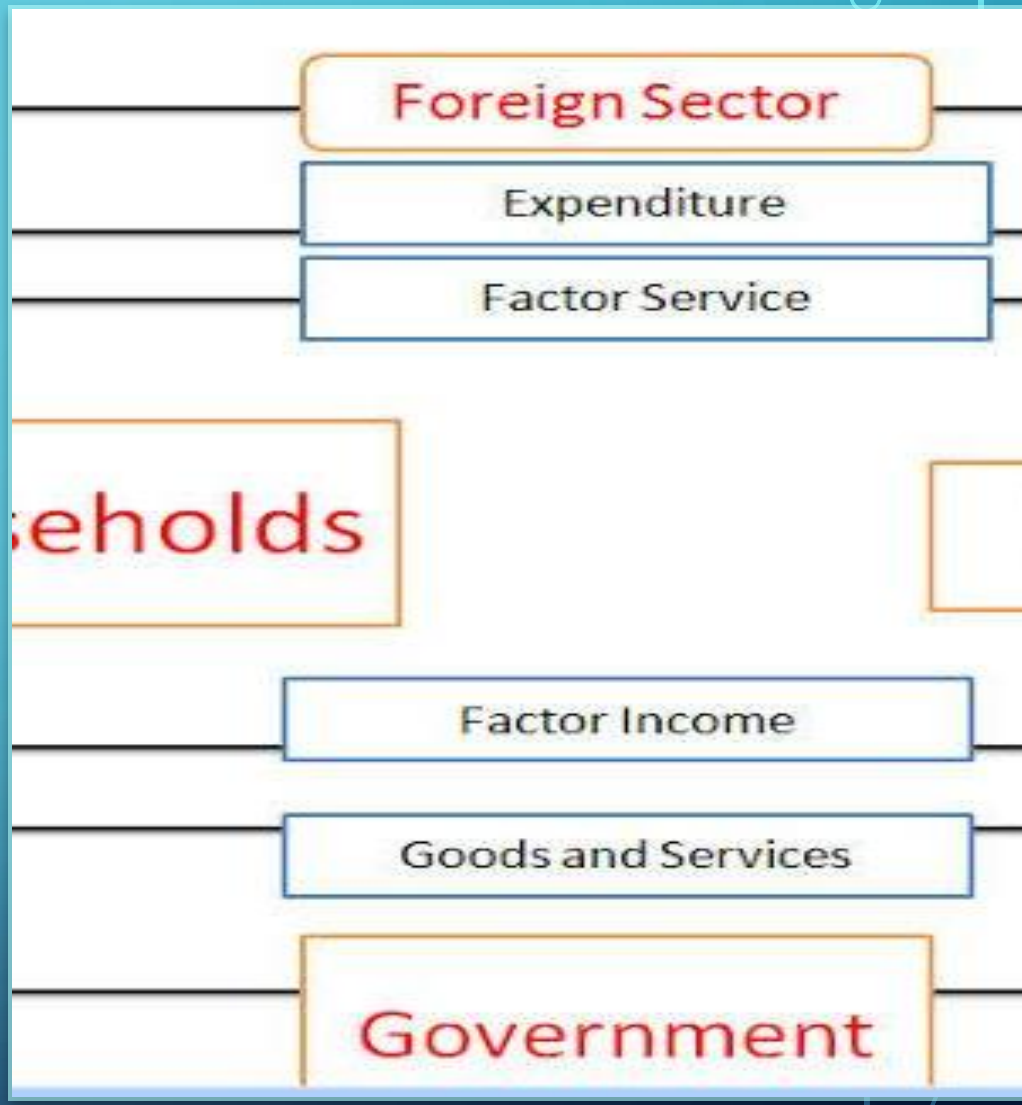

- १. बचत एवं निवेशबकी अनुपस्थिती में दो क्षेत्रिय चक्रीय प्रवाह
- . C + Y तथा। S. =. O

२. बचत एवं निवेश के साथ दो- क्षेत्रिय चक्रीय प्रवाह

. C. +. S. = C. +. I. = Y. तथा S. =. I

३. त्रिक्षेत्रीय चक्रीय प्रवाह

. C. +. I. +. T. =. C. + I. +. G. = Y तथा S + T. = I +. G

4 चार क्षेत्रीय प्रवाह ---

5 C. +. S. +. T. +. M. = C. + I + G + X = Y. तथा

6 S. + T. + M = I + G + X

आय के चक्राकार प्रवाह का महत्व
IMPORTANCE OF CIRCULAR FLOW OF INCOME

1. अर्थव्यवस्था में असंतुलन क्यो पैदा हो जाता है तथा इसे कैसे स्थापित किया जा सकता है इसका अध्ययन आय के चक्राकार प्रवाह द्वारा ज्ञात होता है।
2. आय के प्रवाह से यह भी ज्ञात होता है की, उसमे से रिसाव कैसें होता है। आयात करने से देश की निर्यात बढाकर रोका जा सकता है।
3. यदी बचत के रूप में रिसाव होता है तो इसका कुल व्यय पर क्या प्रभाव पडता है , यह भी चक्राकार प्रवाह के अध्ययन से प्राप्त होता है।
4. अर्थव्यवस्था में मौद्रीक नीति का शही उपयोग करने के लिये आय के चक्राकार प्रवाह का अध्ययन ऊपयुक्त होता है।बचत एवं विनियोग में असंतुलन निर्माण होनेपर उचित मौद्रीक नितीद्वारा इसमे असंतुलन प्राप्त करना आसन हो जात है।
5. राजस्व निती में भी आय के चक्राकार प्रवाह का अध्ययन सहाय्यक होता है।
6. कर तथा सरकारी व्यय का निर्धारण राजस्व नीति के द्वारा किया जात है। यदी बचत तथा कर की मात्रा, विनियोग तथा सरकारी व्यय से अधिक है तो सरकार को ऐसी राजस्व नीति अपनानी चाहिये जीससे करो में कमी आ सके एवं सरकारी व्यय में वृद्धी हो।इसके विपरीत स्थिति में सरकार ने बचत तथा करो में वृद्धी करनी चाहीए।

आय के चक्राकार प्रवाह के दोष एवं मर्यादाये
DEMERITS & LIMITATIONS OF CIRCULAR FLOW OF INCOME

1. अमौद्रीक सौदो का समावेश सम्भव नहीं।
2. स्वयं के उपभोग की वस्तूओ के रूप में रिसाव।
3. पारस्पा रिक लेन- देन को चक्राकार प्रवाह में शामिल नहीं किया जाता।
4. उत्पादक वस्तूओ का फर्म के बीच लेन – देन।

Gracias
Thanks!
THANK YOU!